मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में ग्रामीण नारी

डॉ. कमलेश,
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला छावनी।

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में नारी को केन्द्र में रखकर उससे संबंधित विभिन्न विषयों पर लेखन कार्य किया जा रहा है। भारतीय परिवेश में भूमंडलीकरण के प्रभाव स्वरूप, शिक्षा तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई क्रान्ति के कारण पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों में परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन के प्रभाव से ग्रामीण आंचलों का परिवेश भी अछूता नहीं रहा। वर्तमान समय में कई लेखक, लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में नारी को केन्द्र में रखा है। पिछले लगभग तीन दशकों से हिन्दी साहित्य में अपने लेखन कार्य से जिन रचनाकारों ने नारी की स्थिति को सुधारने तथा उसके प्रति परम्परागत दृष्टि को बदलने के लिए अभियान चलाया है उनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रगण्य है। नारी जीवन की विविध दशाओं तथा उसकी दशा का यथार्थ चित्रण करना उनके लेखन का मूल भाव रहा है। उनके लेखन में विद्यमान अनुभव तथा अनुभूति उनकी सर्जनात्मकता को और प्रभावशाली बना देता है। उनके लेखन कार्य को स्त्री-विमर्श में मील का पत्थर माना जाता है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण मिट्टी की गंध मिलती है और उनकी कहानियों में ग्रामीण नारी के जीवन को उसकी यथार्थ स्थिति के परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया गया है। उनकी कहानियों में ग्रामीण अंचल को विषय बनाया गया है, अतः ग्रामीण अंचल की नारी को जीवन में किन-किन स्थितियों से गुजरना पड़ता है तथा परम्परागत पुरुष मानसिकता से ग्रस्त समाज में उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसका यथार्थ चित्रण इस कहानी संग्रह 'समग्र कहानियाँ अब तक' के अंतर्गत संकलित कहानियों- फैसला, रास, आक्षेप, अपना-अपना आकाश, गोमा हँसती है, रायप्रवीन तथा अन्य कहानियों में किया गया है।

वर्तमान समय में कई कथाकारों ने ग्रामीण परिवेश की नारी को केन्द्र में रखकर लेखन कार्य किया है। भूमंडलीकरण से उपजी परिस्थितियों ने नारी में आत्मनिर्भर होने तथा अपनी अस्मिता को बनाए रखने की चेतना पैदा भी की है जिससे ग्रामीण नारी की सोच में भी परिवर्तन आया है। वह आज अपने हित के लिए सोचती है। शिक्षा के विकास तथा महिला आरक्षण के तहत किए जा रहे प्रयासों से उसकी स्थिति में भी बदलाव आ रहा है, परन्तु महानगरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की स्थिति आज भी शोचनीय बनी हुई है। गाँवों में आज भी पुरुष प्रधान मानसिकता विद्यमान है। जिसके कारण आज भी वहां की औरतों को पुरुषों के शोषण का शिकार होना पड़ता है और उनके प्रभावाधीन रहने को मजबूर है जिससे उनका विकास अवरूद्ध है। इसी स्थिति का चित्रण मैत्रेयी पुरुष की कहानी 'फैसला' में हुआ है। कहानी में विसुमतिया ऐसी ही ग्रामीण नारी है। वह गाँव की प्रधान है, लेकिन पंचों में बैठकर फैसला लेने का कार्य उसका पति करता है। खानदानी मर्यादा की दुहाई देकर उसे घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता। उसकी सखी इसूरी बोलती है, "लो हद हो गई? हौदा पर तो बिसुमती और राज को रनवीर। अरे अपनी पिरमुखी सम्भारे। परिधान से इन्हें अब क्या मतलब?"[1] विसुमति पस्त हिम्मत थी, अगर वह कुछ कार्य करने लगती तो उसे खानदान, परम्परा याद आती। वह प्रधान होकर हरदेई के प्रति फैसला नहीं रह सकी। उसके पति ने ही फैसला नहीं कर सकी। उसके पति ने ही फैसला सुनाया था जिसका परिणाम यह होता है इसूरी की बेटी हरदेई आत्महत्या कर लेती है। दुःखी हरदेई की माँ अपना दुःख व्यक्त करती है उसके शब्दों में एक ग्रामीण महिला की मर्यादा उसकी स्थिति व्यक्त होती है, "अच्छा होता बसुमती, हम अपना वोट काठ की लठिया को दे आते, निर्जीवि लकड़ी को उठाये उठती तो। वैरी पर वार ते करती। अती चालो के विरोध में पड़ती। पर रणवीर की दुल्हन, तुम तो बड़े घर की बहू ही रही। विरमुख जी की पत्नी। घूँघट में लिपटी पुतरिया-सी चलती रही, आँखें मूँद के।"[2]

ग्रामीण नारी में संस्कार और संवेदना कूट-कूट कर भरे होते हैं। वह आदर्शवादी विचारों की होती है 'आक्षेप' कहानी में रमिया एक साहसी ग्रामीण लड़की है। वह हमेशा दूसरों की मदद से लिए तत्पर रहती है। गाँव के लोग उसके बारे में उलटी-सीधी बातें करते हैं पर वह किसी की बातों की तरफ ध्यान नहीं देती है और अपना कार्य करने में व्यस्त रहती है। वह गाँव के लड़के की मदद करती है वह घर आए बाबू जी को बताती है, "बाबू जी जो मुन्ना बिमार हैजा के इम्तहान के परचा है और जाके पिता बाहर गाँव गये हैं। बिचारी माँ हवी अकेली...

बाऊ वो भी बुखार से परी घबड़ाये रही। सो बाबू जी, हम जाय कन्धा पै लाऐ चले आये। परचा छूट जाती तो साल बरबाद हुई जातौ।"[3] अतः दूसरों की मदद की भावना ग्रामीण नारी में विद्यमान रहती है वह अपनी अपेक्षा दूसरे की मदद करके खुश रहती है।

रमिया अनपढ़ गाँव की लड़की है, लेकिन शिक्षा के प्रति उसमें जागृति है। शिक्षा के प्रति गांव की महिलाओं में चेतना आई है वह स्वयं तो पढ़ी-लिखी नहीं होती, लेकिन अपने बच्चों को पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ती। 'अपना-अपना आकाश' कहानी की लखिया स्वयं अनपढ़ महिला थी। वह अपने तीनों बेटों को पति की मृत्यु के बाद मेहनत करके पढ़ाती है। उसके बेटे बड़े होकर अच्छी नौकरियाँ पा लेते हैं। लखिया अपने जीवन से संतुष्ट होती है कि उसकी मेहनत सफल हुई थी। उसके देवर ने भी उसकी बड़ी सहायता की थी। "लखिया का श्रम सफल हो गया था निछावर हो गयी थी पुत्र सरीखे देवर पर।"[4] लेखिका ने शिक्षा के प्रति हो रही ग्रामीण महिला की जागृति का उल्लेख किया है।

ग्रामीण नारी को अपने पुरुष की शक्की प्रवृत्ति का भी शिकार होना पड़ता है। पति नहीं चाहता कि उसे किसी प्रकार की स्वतंत्रता मिले। 'गोमा हँसती है' कहानी में ग्रामीण पत्नी, पति के शक का शिकार होती है। किड्ढा सिंह की पत्नी एक भोली-भाली रूपवती महिला है। उसके पति को लगता है उसकी पत्नी के उसके दोस्त के साथ संबंध हैं। उसकी पत्नी अगर कुछ नया पहनती है तो वह सोचता है कि यह वह उसके दोस्त के लिए पहन रही है। गोमती उसकी पत्नी घूँघट निकाल कर उसके दोस्त के पीछे जा रही थी उससे बर्दाश्त नहीं हुआ और वह अस्पताल में जाकर पत्नी से मार-पीट करता है, "डाकधरनी के ऐन सामने से चुटिया पकड़कर घसीट लाया गोमा को! साली!"[5] गाँव में अकसर औरतों पर ऐसे अत्याचार होते रहते हैं जिसके कारण महिलाओं को कष्ट सहने पड़ते हैं।

उनकी कहानी 'रायप्रवीन' में सावित्री एक संस्कारशील पत्नी है। जब गाँव में बाढ़ आई तो घर में सब कुछ नष्ट हो गया। सावित्री का पति वीरेन्द्र बुखार से तड़प रहा था। घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। वह पति की बीमारी से परेशान हो जाती है। अनाज के लिए वह राहत कैम्प में जाती है। वहाँ पर उसे अपनी इज्जत बेचकर अनाज मिलता है। जब वह घर पहुंची तो उसके पहुंचने से पहले अनाज पहुंच गया था। वह खुश थी कि खाने से उसके पति को कुछ आराम मिलेगा, लेकिन उसके पति ने उसका साथ नहीं दिया, न ही उसकी मन की भावनाओं को समझा। जैसे ही वह अन्दर आई पति को देखकर घबरा गई। वह कहता है, "अभी क्यों आई? वह रहती? यार बहुत मन भाये? वह उसे मारता पीटता है।"[6] नारी अपने को कष्ट देकर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाना चाहती है, परन्तु उसकी भावनाओं को कोई समझ नहीं है जिसके कारण उसको शारीरिक, मानसिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। पति या पत्नी अगर दोनों में से किसी को भी एक दूसरे पर संदेह हो जाए तो पति-पत्नी के संबंधों के बीच तनाव आ जाता है।

कहानी की नायिका बिसुमतिया पंचायत का चुनाव जीत गई। उसके जीतते ही गाँव की महिलाओं में भी प्रसन्नता की लहर दौड़ आई कि अब वह उनके पक्ष में भी न्याय करेगी। वह सोचने लगी कि अब वह महिलाओं के प्रति पक्षपात नहीं होने देगी, हमेशा गाँव की महिलाओं का देगी। प्रधान बनने के बाद उसके साथ कुछ और ही घटित हुआ उसके पति ने उसे बैठक में जाने के लिए मना कर दिया। वह कहता है, "सुन ले! और समझ ले अपनी औकात मजबूरी में खड़ी करनी पड़ी तू मैं दो-दो पदवी नहीं रख सकता था।"[7] बिसुमतिया के पति के माध्यम से पुरुष की घृणित मानसिकता का रूप उजागर होता है। पुरुष नारी पर अपना सम्पूर्ण वर्चस्व बनाए रखना चाहती है। वह नारी को अपने अनुसार कार्य संचालन करने के लिए अग्रसर होने देता है। उसका पति पंचायत का कारोबार स्वयं संभालता है, क्योंकि वह अपनी पत्नी को कार्य करता नहीं देख सकता इसमें उसे लगता है वह पत्नी से पीछे रह जाएगा और पत्नी समाज में अपना नाम कमा लेगी। वह उसे हमेशा ताने देता रहता है- "कचहरी करने का इतना शौक था, तो बाप से कहकर वकालत पढ़ ली होती।"[8] पुरुष नारी को किसी भी स्थान पर अपने सामने खड़े होता नहीं देख सकता है। अगर नारी पुरुष से आगे बढ़कर कार्य करना चाहे तो पुरुष इसमें अपनी हीनता समझता है।

मैत्रेयी पुरुष की कहानियों में नारी का विद्रोही रूप उभरकर समाने आया है। नारी ने पुराने संस्कारों का विद्रोह करके समाज में अपनी नई पहचान बनाई है। नारी अपने प्रति हो रहे शोषण का बदलाव विद्रोह करके लेती है, 'रास' कहानी की नायिका जैमन्ती का ससुर उसके साथ शादी की पहली शत में सो जाता है। वह इस अपमान को सह नहीं पाती और पति से कहती है, "सवेरे मुँह अँधियारे मेरे पीहर पहुँचा आना नहीं तो हल्ला कर दूँगी।"[9] जब वह अपनी माँ के पास पहुँचती है, तो उसकी माँ उसे ही कोसती है। वह उसे बोलती तू वापिस ससुराल चली जा। तेरे चाचा माफी माँग लेंगे। वह माँ की माफी माँगने की बात को भी विरोध करती है, "तू निसाखातिर रह अम्मा, मैं तेरे ऊपर बोझ

नहीं बनूँगी। नाऊ की बेये हूँ टहल करके पेट भर लूँगी।"[10] इस प्रकार अपने शोषण के खिलाफ आवाज उठाने पर भी उसका तिरस्कार किया जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा की 'अपना-अपना आकाश' कहानी में धोखेबाज बेटे की कहानी हैं जो वृद्धावस्था में अपनी माँ से धोखा करते हैं। बेटे जब बड़े हो गए तो माँ को बहुत संतुष्टि हुई सब अपने काम में लग गए। दो बेटे दिल्ली में बस गए, एक गाँव में ही घर बनाकर रहने लगा। दिल्ली वालों ने तो अपनी मर्जी से विवाह किया माँ को सिर्फ शादी पर ही बुलाया। माँ ने कुछ नहीं कहा। माँ घर पर अकेली ही रहती थी। एक दिन अचानक बेटों ने माँ से जमीन के बंटवारे के लिए कहा। माँ ने मना किया तब भी उन्होंने जमीन को बेचकर पैसे बाँट लिये। बाद में माँ के नाम जो दस बीघे जमीन थी वह माँ को झूठी बातों में डाल कर अपने नाम करवा ली। उसके बाद में माँ को तीनों बेटे के घरों की ठोकरें खानी पड़ी। उन्होंने माँ को चार-चार महीने के लिए बांट लिया। उनका बिस्तर एक घर से उठाकर दूसरे घर पटका जाने लगा। उन्हें जब पता चलता है कि "उनके बेटों ने उनके जीवन के शेष रहते दिनों को भी आपस में बाँट लिया है जमीन की ही तरह शान्ति से...। चार-चार महीने में खण्डित करके जीवन के शेष सालों को विभाजित कर दिया है।"[11] अब वह चार महीने से ज्यादा किसी भी बेटे के घर में नहीं रह सकती। अब वह चार महीने ज्यादा किसी भी बेटे के घर में नहीं रह सकती। जिस बेटे के घर जाती वहाँ बहुएँ उन्हें तिरस्कृत करती। एक दिन जब दिल्ली में थी, तो बहू चिड़चिड़ी होने लगी। एक दिन तंग आकर कह ही बैठी, "अम्मा जी कोई आ जाए तो अपने कमरे में चले जाया करो। गाँव में क्या टी.वी. ही देखती थी। कुछ आपके लायक आएगा तो बुला लेंगी।"[12]वृद्धावस्था में माँ को दर-दर की भीख खाने पड़ती है। वह यह सब बर्दाश्त नहीं करती और बेटे का घर छोड़कर यह सोचकर गाँव वापिस आ जाती है कि अकेलापन तो सहना पड़ेगा, लेकिन अपमान तो नहीं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कहानी संग्रह 'समग्र कहानियाँ अब तक' में संकलित कहानियों में ग्रामीण नारी की दशा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है जिसमें उसे पुरुषवादी मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। उसे जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परम्परा-मर्यादा के नाम पर उसकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है उसे स्वतंत्र रूप में फैसले लेने से रोका जा रहा है पति के शक तथा शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। वृद्धावस्था में उसे अपने बच्चों के तिरस्कार का सामना करना पड़ता है, अतः कहा जा सकता है ग्रामीण नारी को आजीवन अनेक समस्याओं को झेलना पड़ रहा है अगर वे सामाजिक रूढ़ियों तथा पुरुष प्रधान मानसिकता का विरोध करती है तो भी से दबाने का प्रयास किया जा रहा कुछ मिलाकर ग्रामीण नारी की स्थिति में सुधार की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती, इसी तथ्य को मैत्रेयी पुष्पा में आलोच्य कहानी संग्रह में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ :

1 मैत्रेयी पुरुष, समग्र कहानियाँ अब तक : फैसला (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.531

2 वही, पृ.537

3 वही, समग्र कहानियाँ अब तक: आक्षेप, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.73

4 वही, समग्र कहानियाँ अब तक : आपना–अपना आकाश, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.417

5 वही, समग्र कहानियाँ अब तक : गोमा हँसती है, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ .626

6 वही, समग्र कहानियाँ अब तक : रायप्रवीन, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.253

7 वही, समग्र कहानियाँ अब तक : फैसला, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.538

8 वही, पृ. 538

9 वही, समग्र कहानियाँ अब तक : रास, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.272

10 वही, पृ. 274

11 वही, समग्र कहानियाँ अब तक: अपना अपना आकाश, (दिल्ली: किताबघर प्रकाशन,प्रथम सं. 2009), पृ.418

12 वही, पृ. 413